

खेलकूद में प्रदर्शनवर्धक रसायन

खेलकूद प्रतिस्पर्धाओं में अपना प्रदर्शन बेहतर करने के लिए तमाम जायज़-नाजायज़ तरीकों का इस्तेमाल किया जाता है। इनमें से एक तरीका है रसायनों पर आधारित। इस मामले में अधिकारियों और खिलाड़ियों के बीच डाल-डाल, पात-पात का खेल चलता रहता है। हाल ही में एक बार फिर एथलेटिक्स प्रतियोगिताओं पर संदेह के बादल मंडराने लगे हैं। एथलेटिक्स संगठनों के अंतर्राष्ट्रीय संघ की एक रिपोर्ट के मुताबिक 5000 एथलीट्स में से कम से कम 800 से ज़्यादा के खून की जांच से लगता है कि वे ऐसे प्रतिबंधित रसायनों का उपयोग कर रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक 2001 और 2012 के बीच जीते गए 146 विश्व स्तरीय पदक संदेह के दायरे में रखे जा सकते हैं।

प्रदर्शनवर्धक रसायनों के सेवन पर रोक लगाने की दृष्टि से हर प्रतिस्पर्धा से पहले और बाद में एथलीट्स के खून व पेशाब की जांच की जाती है। यदि नमूनों में कोई ऐसा रसायन पाया जाता है तो उस खिलाड़ी पर प्रतिबंध लगाया जा सकता है। मगर इस तरीके में कई खामियों को देखते हुए 2009 में अंतर्राष्ट्रीय संघ ने हरेक एथलीट के लिए रक्त की नियमित जांच अनिवार्य कर दी थी। रक्त की इस नियमित जांच के आधार पर प्रत्येक एथलीट का एक जैविक पासपोर्ट तैयार किया जाता है ताकि शरीर में हो रहे अचानक परिवर्तनों को नोट किया जा सके। जैसे खून में लाल रक्त कोशिकाओं की संख्या में अचानक वृद्धि से संकेत मिलता है कि खिलाड़ी ने रक्ताधान करवाया है।

मगर डाल-डाल, पात-पात जारी रहा। हालांकि जैविक पासपोर्ट के बाद रसायनों के उपयोग में कमी आई मगर आज भी कई खिलाड़ी ऐसे रसायनों का उपयोग थोड़ी-थोड़ी मात्रा में लंबे समय के लिए करते हैं ताकि अचानक



परिवर्तन की स्थिति न बने।

अब ब्रिटेन विश्वविद्यालय के यानिस पिट्सीलेडिस कुछ नए परीक्षण विकसित करने की कोशिश कर रहे हैं। पिट्सीलेडिस अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति के चिकित्सा व विज्ञान आयोग के सदस्य हैं। वे जिस विधि पर काम कर रहे हैं उसका सम्बंध जेनेटिक्स से है। दरअसल आप जब खून लेते हैं या कोई प्रदर्शनवर्धक दवा लेते हैं तो वह आपके शरीर में कुछ जीन्स को सक्रिय अथवा निष्क्रिय कर देती है। पिट्सीलेडिस जीन्स की अभिव्यक्ति में होने वाले इन परिवर्तनों के आधार पर जांच का तरीका तैयार करने में जुटे हैं।

पिट्सीलेडिस एक हारमोन ईपीओ के सेवन से जीन अभिव्यक्ति में होने वाले परिवर्तनों को पहचान चुके हैं। यह हारमोन रक्त द्वारा शरीर को पहुंचाई जाने वाली ऑक्सीजन की मात्रा को बढ़ा देता है। दिक्कत यह है कि अन्य दवाइयों से होने वाले ऐसे परिवर्तनों की पहचान करने के लिए काफी धन की ज़रूरत है।

खून की जांच के अलावा एक विकल्प बालों की जांच का भी है। हालांकि विश्व एंटी-डोपिंग एजेंसी इसकी इज़ाजत नहीं देती है मगर यूके के शेफील्ड हैलम विश्वविद्यालय के टॉम बेसिनेड के मुताबिक इसकी संभावनाओं से इन्कार नहीं किया जा सकता क्योंकि बालों से आपको दवाइयों के लंबे समय के उपयोग की जानकारी मिल सकती है। यूके में क्रिकेट खिलाड़ियों द्वारा मनोरंजन के लिए ली जाने वाली दवाइयों के संदर्भ में यह जांच नियमित रूप से की जाने लगी है।

मगर खेलकूद में रसायनों के उपयोग के मामले में लगभग सभी विशेषज्ञों का मत है कि चूहा-बिल्ली का यह खेल चलता रहेगा। ऐसी कोई जांच विधि नहीं है, जिसका तोड़ न निकाला जा सके। (स्रोत फीचर्स)